॥ गणेश चालीसा ॥

Chalisamantras.com

।। दोहा ।।
जय गणपति सदगुण सदन,
कविवर बदन कृपाल ।
विध्न हरण मंगल करण,
जय जय गिरिजालाल ।

।। चौपाई ।।
जय जय जय गणपति गणराजू,
मंगल भरण करण शुभ काजू ।
जय गजबदन सदन सुखदाता,
विश्व विनायक बुद्धि विधाता ।

वक्र तुण्ड शुची शुण्ड सुहावना,
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ।
राजत मणि मुक्तन उर माला,
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ।

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं,
मोदक भोज सुगन्धित फूलं ।
सुन्दर पीताम्बर तन साजित,
चरण पादुका मुनि मन राजित ।

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता,
गौरी लालन विश्व विख्याता ।
ऋद्धि सिद्धि तव चंवर सुधारे,
मुषक वाहन सोहत द्वारे ।

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी,
अति शुची पावन मंगलकारी ।

Chalisamantras.com

एक समय गिरिराज कुमारी,
पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी ।

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनुपा,
तब पहुंच्यो तुम धरी दविज रूपा ।
अतिथि जानी के गौरी सुखारी,
बहुविधि सेवा करी तुम्हारी ।

अति प्रसन्न हवै तुम वर दीन्हा,
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ।
मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला,
बिना गर्भ धारण यहि काला ।

गणनायक गुण ज्ञान निधाना,
पूजित प्रथम रूप भगवाना ।
अस कही अन्तर्धान रूप हवै,
पालना पर बालक स्वरूप हवै ।

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना,
लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना ।
सकल मगन, सुखमंगल गावहीं,
नाभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं ।

शम्भु, उमा, बहुदान लुटावहिं,
सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं ।
लखि अति आनन्द मंगल साजा,
देखन भी आये शनि राजा ।

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं,
बालक, देखन चाहत नाहीं ।
गिरिजा कुछ मन भेद बढ़ायो,
उत्सव मोर, न शनि तुही भायो ।

Chalisamantras.com

कहत लगे शनि, मन सकुचाई,
का करिहौ शिशु मोहि दिखाई ।
नहिं विश्वास उमा कर भयऊ,
शनि सों बालक देखन कहयऊ ।

पदतहिं शनि दृग कोण प्रकाशा,
बालक शिर उड़ि गयो अकाशा ।
गिरिजा गिरी विकल हवै धरणी,
सो दुःख दशा गयो नहीं वरणी ।

हाहाकार मच्यौ कैलाशा,
शनि कीन्हों लखि सुत को नाशा ।
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो,
काटी चक्र सो गज सिर लाये ।

बालक के धड़ ऊपर धारयो,
प्राण मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो ।
नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे,
प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वर दीन्हे ।

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा,
पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ।
चले षडानन, भरमि भुलाई,
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई ।

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें,
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ।
धनि गणेश कही शिव हिये हरषे,
नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ।

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई,
शेष सहसमुख सके न गाई ।

Chalisamantras.com

मैं मतिहीन मलीन दुखारी,
करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी ।

भजत रामसुन्दर प्रभूदासा,
जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ।
अब प्रभु दया दीना पर कीजै,
अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै ।

।। दोहा ।।
श्री गणेश यह चालीसा,
पाठ करै कर ध्यान ।
नित नव मंगल गृह बसै,
लहे जगत सन्मान ।

सम्बन्ध अपने सहस्त्र दश,
ऋषि पंचमी दिनेश ।
पूरण चालीसा भयो,
मंगल मूर्ति गणेश ।

Chalisamantras.com

Chalisamantras.com